Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

वाल्मीकि रामायण में लोक जीवन एक अध्ययन

पंकज तिवारी
शोध छात्र, संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय झाँसी (सम्बद्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,झाँसी)
शोध केन्द्र–नेहरू महाविद्यालय ललितपुर उ0प्र0 (सम्बद्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,झाँसी)

सारांश – रामायण को देश का आदिकाव्य माना जाता है तथा वाल्मीकि को आदिकवि। रामायण का सम्पूर्ण ताना बाना दशरथ पुत्र राम को नायक मानकर चुना गया है। जो एक महाकाव्य के रूप में है। वास्तव में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण राष्ट्र को सबसे बड़ी देन है। चूँकि वाल्मीकि रामायण संस्कृत में है तथा उस काल में संस्कृत जानने वाले लोगों की संख्या अधिक नहीं थी, अतः एक ही विद्वान कथा कहता था तथा अन्य जन उसे भक्तिभाव से आनन्दपूर्वक श्रवण करते थे। इसके फलस्वरूप रामकथा का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। महर्षि के बाद के अन्य अनेक कवियों ने भी उसी पर आधारित अनेक रचनाएं कीं।

मुख्य शब्द – बेबीलोन, आत्मोत्सर्ग, आत्मोकर्ष, वृहद्धर्मपुराण, अपरिहार्य, अन्नजीवी, परिवर्धन, संपृक्त, यर्थाथ, सर्वभूतहितेरतः, विश्वजनीय।

वाल्मीकीय रामायण के लौकिक संस्कृत का प्रथम काव्य होने पर भी इसमें भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, राजनीति, शिल्प कला, साहित्य,संगीत, ज्योतिष, गणित, सांख्यिकी तथा अन्यान्य शास्त्रों का जैसा विशद, मनोरम, और सर्वांगीण चित्रण हुआ है, उसे देखकर सचमुच आश्चर्य होता है। इसे ऋषि की शालीनता अथवा विनम्रता ही समझना चाहिए कि उन्होंने महाभारतकार व्यास के समान यह गर्वोक्ति नहीं की–**'यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'** अर्थात् यह ग्रन्थ ज्ञान–विज्ञान के सभी रूपों और भेदों को समेटे हुए है, अन्यथा यह सत्य है कि 'वाल्मीकीय रामायण'सभी विषयों का विशद वर्णन करने वाला तथा शास्त्रीयता को सरसता प्रदान करने वाला अद्भुत ग्रन्थ है।

अपनी जन्मभूमि को जननी के समकक्ष और स्वर्ग से भी अधिक सुखकर मानने की भावना सर्वप्रथम इस ग्रन्थ में ही मुखरित हुई है। लक्ष्मण लंका के वैभव और सौन्दर्य पर मुग्ध है, वह प्रकारान्तर से उस नगरी का आनन्द लेने की अपनी उत्सुकता का संकेत देता है परन्तु श्रीराम दृढ़ स्वर में कहते हैं–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे रोचते लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।[1]

रामायण की लोक संस्कृति का विश्लेषण हिन्दू–धर्म के व्याख्याताओं और उन्नायकों का सदा से प्रिय विषय रहा है, और हमारे साहित्य में ऐसे लेख, ग्रंथ एवं काव्य बिरले ही मिलेंगे, जिनमें राम की प्रस्तुति, उनके अलौकिक चरित्र का कीर्तन अथवा एक मर्यादा–पुरुषोत्तम के रूप में लोकोत्तर विभूति के रूप में उनका चित्रण न किया गया हो। किन्तु आज के व्यावहारिक जगत् में हम अधिक रस किसी युग एवं व्यक्ति के लौकिक मूल्यांकन में लेने लगे है, किसी का निरा श्रद्धाजन्य वर्णन हमारी आंतरिक अभिरुचि को नहीं जगा पाता। राम राज्य अथवा रामायण काल प्राचीन भारतीय समाज का एक स्वर्णयुग था परन्तु उसका मात्र विशेषणों में वर्णन कर देने से, उसके मात्र प्रशस्ति गान से हमारी जिज्ञासा तृप्त नहीं होती।

भारत की लोक सांस्कृतिक परंपराओं को समझने के लिए रामायण में वर्णित सांस्कृतिक परिस्थितियों से सुपरिचित होना आवश्यक है, क्योंकि एक तो उनकी संस्कृति आज भी हमारे समाज में न्यूनाधिक रूप में परिलक्षित होती है और दूसरे, हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का राजनैतिक और सामाजिक जीवन का जैसा सजीव वर्णन उनमें मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। वाल्मीकि ने आर्य–संस्कृति के एक अतिशय प्राचीन एवं उत्कृष्ट युग को मानो साकार रूप में रंगमंच पर उपस्थित कर दिया है, और उसके सांस्कृतिक तथ्य मिस्र या बेबीलोन की तरह किसी मृत संस्कृति के निर्जीव उपलक्षण नहीं है, अपितु एक आत्मनिष्ठ और सुसंस्कृत जाति के अस्तित्व और सजीव चेतना के पुरातन प्रतीक हैं। प्राचीन आर्यों का मस्तिष्क उर्वरा और प्रतिक्षण जागरूक था। उन्होंने उदात्त और विचारोत्तेजक सिद्धान्तों की नव सृष्टि की, तथा उन्हें भाषा, संगीत और कला के माध्यम से हृदयग्राही रूप से अभिव्यक्त किया। भारत में स्पंदनशील कण बिखरे पड़े हैं, एक सूत्र में पिरोकर उनका पुनरुद्धार करने के लिए सामाजिक चेतना से भरपूर बौद्धिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

वाल्मीकि रामायण के लोक जीवन के अध्ययन की केवल सैद्धान्तिक या शैक्षणिक महत्ता नहीं है, उसकी व्यावहारिक उपयोगिता भी है। रामायण आर्य संस्कृति की आधारशिला रही है। भारतीयों ने रामराज्य को सदा से सुराज्य का पर्यायवाची माना है और आज भी वही हमारी शासन व्यवस्था का आदर्श है। रामायण में उन कोमल भावनाओं का चित्रण है, जिनसे हमारा कौटुम्बिक जीवन ओत–प्रोत रहता है। हिन्दुओं की रीति–नीति कर्तव्य पालन का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करती है। अतः ऐसे अमर ग्रंथ में लोक संस्कृति के व्यवस्थित अध्ययन की व्यावहारिक उपयोगिता प्रचुर भी है। सामान्य भारतीय रामायण काल को अपने इतिहास का स्वर्णयुग मानता है, किन्तु इस युग की सभ्यता और संस्कृति के विषय में उसकी धारणाएं अत्यन्त सीमित, अल्प, अपूर्ण, भ्रांत, निराधार एवं स्वनिर्मित है। रामायण के लोक जीवन के अध्ययन एवं विश्लेषण द्वारा उसकी इन धारणाओं का निराकरण भी किया जा सकता है और साथ ही साथ उसे भारत के एक चिरस्मरणीय युग का प्रामाणिक परिचय भी दिया जा सकता है।

ग्रामीण जीवन लोक जीवन– सामाजिक जीवन के दो पक्ष होते हैं–शास्त्रीय और लोक। रामायण में एक ओर नगरीय जीवन की झांकी प्रस्तुत है तो दूसरी ओर ग्रामीण जीवन की। नगरीय जीवन में मुख्यतः जहाँ शास्त्रीय विधि–विधान का पालन होता है वहीं ग्रामीण जीवन में स्थानीय मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों, रूढ़ियों का पालन किया जाता है। इनको शास्त्रीय विधि से कुछ लेना–देना नहीं होता। ये इनकी विरासत होती है। इसीलि कहा जाता है कि लोक परम्परायें थोड़ी–थोड़ी दूरी पर बदलती हैं जबकि शास्त्रीय प्रथायें सनातन रहती हैं। उनमें बदलाव विशेष स्थिति में ही होता है।

रामायण का अर्थ है राम पर्यटन। राम पैदा हुए थे अयोध्या जनपद में, उनका विवाह हुआ था मिथिला जनपद में, पर उनका जब निर्वासन हुआ तो वह शहर की सीमा को लांघकर जंगलों, पर्वतों, समुद्र के तटों पर पहुँचे, जहाँ आज की तरह पूर्ण सभ्य एवं सुसंस्कृत लोग नहीं रहते थे। उन्होंने अपने वन मार्ग में एक ओर कोल–भीलों की बस्ती का सान्निध्य प्राप्त किया तो दूसरी ओर उनका सम्बन्ध किष्किंधा के वानर परिवार से हुआ। पक्षी परिवार के जटायु ने भी उनके साथ मैत्री का वादा निभाया तो आसुरी प्रवृत्ति के राक्षसों से उन्हें युद्ध करना पड़ा। ये सभी वन्य जातियां थीं जिनके बीच उनको अपने जीवन का चौदह वर्ष व्यतीत करना पड़ा था। तब तक वह राजा नहीं हुए थे। इस काल का वर्णन बाल और अयोध्याकाण्ड के कुछ अंशों को छोड़कर उत्तरकाण्ड तक मिलता है। इसलिए इसमें लोक जीवन की एक बड़ी ही व्यवस्थित झांकी वाल्मीकि ने प्रस्तुत की है। अतः लोक से राम का सामीप्य रामायण की एक विशिष्ट निधि है। वहाँ के जीवन के सम्बन्ध में व्यापक चित्रण करता हुआ कवि क्रमशः राम को वन पथ पर आगे बढ़ाता हुआ, अन्त में फिर उनके राज्य में वापस लाता है। ऐसा लगता है कि मानो कवि ने सब कुछ आँखों देखा विवरण प्रस्तुत किया है।

भारत की कथा परम्परा में रामकथा अनुपम है। भारत की सीमाओं को यह पार कर गयी है। सर्वोत्कृष्ट विश्वकथा का रूप रामकथा ने स्वतः धारण कर लिया है। इस महाकाव्य ने समस्त जन हृदय को प्रभावित किया है। राजाजी (च0 राजगोपालचारी) के शब्दों में "रामायण के आधार पर आज हम जीवित हैं।" उनके इस कथन में कोई सन्देह नहीं कि जब तक भारत–भूमि पर गंगा और कावेरी बहती रहेगी, तब तक सीता राम की कथा आबाल स्त्री–पुरुष सबमें प्रचलित रहेगी और हमारी जनता की रक्षा वह माता की तरह करती रहेगीं।

वाल्मीकि–रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है और आर्षकाव्य भी। मानव जीवन को सार्थक बनाने में इस अनूठी रचना ने कुछ छोड़ा नहीं है। राम को वाल्मीकि ने आदर्श मानवोत्तम माना है। नर में नारायण को उन्होंने देखा है। महर्षि वाल्मीकि का ऋण हमारे ऊपर इतना अधिक चढ़ा हुआ है कि उसे हम रामकथा में तदाकार हुए बिना चुका नहीं सकते। वाल्मीकि रामायण का अनुसरण अन्य भाषाओं के महाकवियों ने भी किया है। निश्चय ही संसार में निहित हुए भी संसार सागर से पार उतार देने वाली यह कथा एक सुगम नौका है। इस अमर रचना के द्वारा एक ऐसा मार्ग प्रशस्त हुआ है, जो आत्मोत्सर्ग और आत्मोत्कर्ष के लक्ष्य तक हमें पहुंचा देता है।

रामायण को फिर यह आशीर्वाद उपलब्ध है कि सृष्टि में जब तक सूर्य, चन्द्र, नदी, पवन, समुद्र आदि का अस्तित्व रहेगा, तब तक रामकथा की लोकप्रियता अक्षुण्ण बनी रहेगी।

यावत् स्थारयन्ति गिरयः सरितश्च महीतले,
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।[2]

जैसा कि विदित ही है कि वाल्मीकि को इस ग्रन्थ की रचना की प्रेरणा ब्रह्माजी से प्राप्त हुई। ब्रह्माजी ने जहां महर्षि को रामचरित पर काव्य रचना करने के लिए कहा,

रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वमृषिसत्तम।[3]

वहां उन्हें अव्यक्त एवं अज्ञात तथ्यों के स्वतः ज्ञात हो जाने का आशीर्वादात्मक आश्वासन भी दिया–

वैदेह्याश्चैवयद् वृत्तं प्रकाशं यदि वा रहः।
तच्चाप्यविदितं सर्वं विदितं ते भविष्यति।।[4]

इसके साथ यह आशीर्वाद भी दिया–

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।[5]

कि तुम्हारी वाणी में सत्य का निवास होगा, कोई भी व्यक्ति तुम्हारे वर्णन पर सन्देह अथवा अविश्वास नहीं करेगा।

वृहद् धर्मपुराण में तो यहां तक कहा गया है कि ब्रह्माजी ने व्यासजी को काव्यरचना में प्रवृत्त होने से पूर्व वाल्मीकीय रामायण को पढ़ने का परामर्श दिया–

पठ रामायणं व्यास काव्यबीजं सनातनम्।

आदिकवि के लिए जो आत्मदर्शन था, वही समाज के लिए जीवन दर्शन बन गया है। यही रामायण का सच्चा और सार्थक दर्शन है। जीवन का प्रमुख आधार जिजीविषा है जो कि रामायण की भाव भूमिका का भी मूल है। नारद के श्रीमुख से आदर्श राम का गुणगान सुनने के बाद जब तपस्वी वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर टहलने जाते हैं तो उनके सामने दो दृश्य दिखाई देते हैं, तमसा का तरल सरल प्रवाह और निषाद के निष्ठुर प्रहार का शिकार क्रौंच पक्षी। तमसा का निर्मल जल देखकर तपस्वी का मन जितना प्रसन्न होता है, क्रौंच–मिथुन के आकस्मिक वियोग को देखकर उतना ही आक्रांत हो जाता है। तमसा नदी का प्रवाह जीवन की सरलता, स्वच्छता और गतिशीलता को प्रेरणा प्रदान करता है, तो क्रौंच मिथुन के एकांतिक सुख में अचानक उत्पन्न आघात जीने और जीने देने की सहज मानवीय लालसा को रक्त–सिक्त और विच्छिन्न बना देता है। मनस्वी महर्षि सोचने लगते हैं कि आखिर मानव इतना निष्ठुर क्यों होता है और वह भी अकारण? जल की तरंगों के समान निर्मल और उर्मिल जीवन प्रवाह का अभिन्न अंग बनकर चलनेवाला प्राणी

अचानक इतना आत्मघाती क्यों बन जाता है ? अपने साथ जीवन का आनंद लेने वाले सहजीवियों को जीने के अधिकार से वंचित करने वाले जीव को जीने का क्या अधिकार है ? इसी प्रकार के प्रश्न प्राचेतस के मन को झकझोरते हैं उनके अंतर्मन में अशांति का चक्रवात उत्पन्न करते हैं और उनके भीतर का शोक बाहर श्लोक बनकर प्रकट होता है।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।[6]

भारतीय साहित्य की यह प्रथम सारस्वत अभिव्यंजना केवल आदिकवि के आदिकाव्य का अक्षर बीज ही नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि का बीजाक्षर है। यही सृष्टि बीज समस्त रामायण को अभीष्ट पुष्टि प्रदान कर उसे इष्ट काव्य का रूप देता है। यज्ञ का दूसरा नाम ही इष्टि है और यज्ञ की भावना से किया गयाकर्म ही धर्म का रूप धारण करता है। प्रत्येक प्राणी प्रारंभ में अन्नजीवी बनकर अपने जीवन यात्रा का आरंभ करता है और धीरे–धीरे प्राण, मन और विज्ञान के सोपानों को पारकर वह अंततः आनंदजीवी बन जाता है। अन्न से प्राणों का प्रणयन होता है वर्षा से अन्न पैदा होता है और वर्षा तभी होती है जब धरती तप–तप कर यज्ञ में अपनी रसमय आहुति देती है। यह सारी प्रक्रिया आंतरिक प्रेरणा और अपरिहार्य कर्तव्य भावना से संपन्न होती है जिसे हम योग अथवा इष्टि का नाम दे सकते हैं।

हमारे देश में महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम श्रीराम की कथा का रामायण के रूप में सृजन किया था। श्री रामदरबार में लवकुश के गायन द्वारा जनसाधारण तक उसे पहुंचाने की परम्परा की भी स्थापना की। उन्होंने रामकथा को राजदरबार तथा जन–जन में समान रूप से प्रचार का माध्यम बनाया जिससे उसकी लोकप्रियता महर्षि के जीवन काल में ही शिखर पर पहुंच गई। महर्षि के पश्चात् रामकथा की लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ी कि अनेकानेक अन्य संस्कृत ग्रन्थों, नाटकों, काव्यों, पुराणों एवं महाभारत में भी रामकथा ने प्रवेश कर लिया। मध्ययुग तक पहुंचते–पहुंचते यही रामकथा प्रादेशिक तथा विदेशी भाषाओं में भी प्रस्तुत की जाने लगी। इतना ही नहीं बौद्ध तथा जैन धर्मावलम्बियों ने भी राम कथा को अपने रूप में अपनाया। अनेक लेखकों द्वारा लिखी जाने के कारण ही मुख्यतः मूल कथा में परिवर्तन तथा परिवर्धन होता रहा, जिससे कथानक का स्वरूप कुछ–कुछ बदलता भी रहा। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानीय भावनाएं एवं प्रथाएं भी इन काव्यों में जुड़ती गई।

रामायण को देश का आदिकाव्य माना जाता है तथा वाल्मीकि को आदिकवि। रामायण का सम्पूर्ण ताना बाना दशरथ पुत्र राम को नायक मानकर चुना गया है। जो एक महाकाव्य के रूप में है। वास्तव में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण राष्ट्र को सबसे बड़ी देन है। चूँकि वाल्मीकि रामायण संस्कृत में है तथा उस काल में संस्कृत जानने वाले लोगों की संख्या अधिक नहीं थी, अतः एक ही विद्वान कथा कहता था तथा अन्य जन उसे भक्तिभाव से आनन्दपूर्वक श्रवण करते थे। इसके फलस्वरूप रामकथा का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। महर्षि के बाद के अन्य अनेक कवियों ने भी उसी पर आधारित अनेक रचनाएं कीं।

रामायण में लोक संस्कृति का विस्तार– वाल्मीकि का रामायण लोक संस्कृति का प्रथम महाकाव्य है। किसी समाज की जीवन प्रणाली उसकी संस्कृति होती है। संस्कृति को राष्ट्रीय परम्परा, अतीत के गौरव, वर्तमान की उपलब्धियां, संघर्ष व भावी स्वप्न सदैव गतिशील रखते हैं। रामायण में प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्पन्दन महसूस होता है।

भारत के लोक जीवन में सत्य, स्वस्ति, शान्ति, तप, त्याग, सर्वभूतहित एवं लोकमांग्ल्य शाश्वत मूल्य हैं। लोकमंगल की भावना से पूरित हमारी संस्कृति त्यागपक्ष पर आधारित है। पश्चिम की भोग प्रधान संस्कृति यथार्थ की ओर तथा भारत की त्याग प्रधान संस्कृति स्वाभाविक रूप से आदर्श की ओर उन्मुख हुई है। रामायण में धर्मसत्य की भव्यता, सौन्दर्य के साथ पवित्रता का संवेदन, तपस्त्याग का औदात्य सतीत्व का तेज जितनी सहजता से प्रकट हुए हैं वह भारत के लोकजीवन में भी उतनी ही महत्ता से संपृक्त हैं।

रामायण में यर्थाथ के धरातल पर आदर्शोन्मुख जीवन प्रक्रिया का दर्शन होता है जो भारत के लोकजीवन में भी प्रकट होता है।

वाल्मीकि रामायण में राम धर्म के और रावण अधर्म के रूप में चिन्हित है। एक सतमार्ग पर तो दूसरा असत्य पर आरूढ़ है। एक को लोक की चिंता है उसकी मर्यादा की चिंता है तो दूसरा स्वयं भयावह है। जीवन के प्रत्येक क्षण में अन्योन्य विरोधी भावों का अंर्तसंघर्ष सदैव उपस्थित होता रहता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा इसके समग्ररूप लोकजीवन में प्रेम, घृणा, कटुता, ईर्ष्या आदि अनेक भावातिरेक क्षण आते रहते हैं। अपनों से प्रेम, अपनों के प्रति ही शंका, अपनों से ही लड़ाई अथवा क्रोध और फिर यही क्रम सामान्य लोकजीवन के यथार्थ हैं। वाल्मीकि रामायण में लोकजीवन के सूक्ष्म से लेकर वृहत्तर तक प्रत्येक भाव का सर्वोत्कृष्ट वर्णन है। परिस्थितियों का वर्णन, नाटकीयता भावनाओं का अन्र्तमंथन, भाषा एवं संवाद की प्रखरता तथा पुष्टता सभी कुछ अनुपम है।

भारत में लोकजीवन का व्यापक परिमाण है। मनुष्यों के अतिरिक्त, परिवार के जीव जन्तु, पेड़—पौधे भी परिवार का अंग हैं। दूत भरत को बुलाने के लिए उनके नाना के यहां जाते हैं, भरत दूतों से पूछते हैं कि मेरे पिता महाराज दशरथ सकुशल तो हैं न, महात्मा श्री राम और लक्ष्मण नीरोग तो हैं न। धर्म को जानने और धर्म की ही चर्चा करने वाली बुद्धिमान् श्रीराम की माता धर्मपरायण आर्या कौसल्या को तो कोई रोग या कष्ट नहीं है। कथा वीर लक्ष्मण और शत्रुघ्न की जननी मेरी मझली माता धर्मज्ञा सुमित्रा स्वस्थ और सुखी है। वसिष्ठ और भरत भरद्वाज मुनि से मिलते हैं। धर्मज्ञ ऋषि ने क्रमशः वसिष्ठ और भरत को अर्ध्य, पाद्य तथा फल आदि निवेदन करके उन दोनों के कुल का कुशल समाचार पूछा। इसके बाद अयोध्या, सेना, खजाना, मित्रवर्ग तथा मन्त्रिमण्डल का हाल पूछा। राजा दशरथ की मृत्यु का वृत्तान्त वे जानते थे, इसलिए उनके विषय में उन्होंने कुछ नहीं पूछा। वसिष्ठ और भरत भी महर्षि शरीर, अग्निहोत्र, शिष्यवर्ग, पेड़—पत्ते तथा मृग—पक्षी आदि का कुशल समाचार पूछा। सीता अशोक वाटिका में हनुमान से राम, लक्ष्मण, उनके मित्र, मातायें, कौसल्या, सुमित्रा, भरत आदि सबका कुशलक्षेम पूछती हैं।

वर्तमान आर्थिक भौतिकवादी मशीनी युग में व्यक्ति का दृष्टिकोण, उसकी भावनायें, अभिलाषायें संकुचित हो रही हैं। पुराने मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों की स्थापना का प्रयास हो रहा है। एक ही परिवार में दो चूल्हे जल रहे हैं। वही रामायण में प्रतिपादित भारतीय जीवन में मिल बांटकर खाने की परम्परा है। इस नवीन मूल्यों के सन्दर्भ में प्राचीन शास्त्रों की समीक्षा एवं मीमांसा अत्यन्त आवश्यक है। नूतन भी ग्राह्य होना चाहिए यदि वह सुन्दर, कल्याणकारी तथा मानवीय गुणों से ओत प्रोत हो। अतः पुरातन तथा नूतन मूल्यों की समीक्षा तथा फिर सामंजस्य स्थापित करना लौकिक जीवन की सतत् प्रक्रिया है। रामायण उत्कृष्ट जीवन मूल्य स्थापित करता है।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में ग्रामीण अंचलों में भारतीय लोकजीवन की छाप है तथा इन ग्रन्थों की छाप भी हमारे लोक जीवन पर है। लोकजीवन के कण—कण में रामायण का प्रभाव विद्यमान है। रामायण में राम के चरित्र द्वारा धर्म मार्ग, सदाचार का संदेश पूरे समाज को दिया गया है। व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य धर्ममार्ग पर चलते हुए लोकहित में संलग्न रहना है। धर्म तथा सत्य निरपेक्ष नहीं है। बल्कि परस्पर सापेक्ष है। इसीलिए राम सर्वज्ञ सर्वभूतहितेरतः हैं। पाप, अत्याचार उत्पीड़न एवं हिंसा का विरोध तथा सदाचार की स्थापना ये ही मनुष्य के प्राकृतिक कर्तव्य हैं। शुभ आचरण, शुभकर्म का संपादन ही धर्म है। लोकजीवन में परिवार, समाज के प्रति दायित्वपूर्ण भावना अन्तर्निहित है। धर्म के साथ अर्थ का अर्जन एवं काम का उचित उपभोग, भारतीय जीवन मूल्य का आधार है। आज के भौतिकवादी पश्चिमी सांस्कृतिक वातावरण में इसी सन्तुलन को बिगाड़ा जा रहा है। धर्म, अर्थ एवं काम एक दूसरे के पूरक हैं तथा उनमें एकता विद्यमान होनी चाहिए। ये तीनों एक दूसरे से भिन्न दिशा में चलेंगे तो जीवन एवं समाज का स्वरूप विकृत होता जायेगा।

वाल्मीकि रामायण में लोकजीवन सार्वकालिक सार्वभौम मूल्यों से सम्बद्ध है और वे मूल्य हैं समाज कल्याण के लिए अपने निर्धारित कर्तव्य का निस्वार्थ सम्पादन। संन्ध्या, पूजा, अर्चना, व्यक्ति के व्यक्तिगत

धर्म हैं। अग्निहोत्र, यज्ञ आदि कुलधर्म हैं। मानवधर्म ही लोकधर्म है और लोकजीवन की आधारभूत नींव है। कर्म का आधार विचार है इन्हीं विचारों से ही संस्कृति का निर्माण होता है। वाल्मीकि रामायणमें मानव जीवन के सम्पूर्ण आयाम इन्हीं विचारों को लक्ष्य करके लोकजीवन की आधारशिला तैयार करते हैं। धर्म–अधर्म, सुन्दर–कुरूप, कर्तव्य–अकर्तव्य, शुभ–अशुभ, युद्ध–शान्ति, आदर्श–यथार्थ आदि अनेक द्वन्द्वों से परिपूर्ण है लोकजीवन। धर्म, आध्यात्म, संस्कृति, राजनीति विज्ञान, अर्थ आदि अनेक लोकजीवन के आयाम हैं। इन सभी आयामों को वाल्मीकि रामायण ने प्रभावित किया है, इसीलिए वाल्मीकि रामायण लोकभाषा में लोकजीवन का प्रथम महाकाव्य है।

भारतीय लोकजीवन में ही नहीं विश्व संस्कृति में भी वाल्मीकि रामायण की इस अमर कृति का विशिष्ट योगदान है। जीवन के हर प्रसंग में रामायण की याद आती है और हर व्यक्ति की जीवनी राम कहानी सी लगती है। समता, ममता और समरसता पर आधारित मानव जीवन की इसी मधुर मनोहारिता का मार्मिक चित्रण में आर्ष कवि की अनर्ध सृष्टि का बीज है। यही बीज रामायण के विविध प्रसंगों में क्रमशः पल्लवित होकर अंत में रामराज्य के शुभोदय में सुन्दर परिजात के रूप में विकसित होता है। यही रामायण का परमार्थ है।

रामायणः लोक संस्कृति का ज्ञानशास्त्र– रामायण का एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि यह ज्ञान का भंडार है। सत्य और धर्म, भक्ति और मुक्ति, भोग और त्याग, अनुराग और विराग इन सबका समन्वय प्रस्तुत करनेवाली प्रशस्त रचना रामायण वास्तव में लोक जीवन का अक्षय कोश है। रामायण के संबंध में यह कहा जा सकता है कि जो रामायण में नहीं है वह विश्व में नहीं, क्योंकि रामायण केवल भारत की ही संपत्ति नहीं है बल्कि वह मानव मात्र की महिमा का गुणगान करने वाली विश्वजनीय रचना है। वह देश काल और व्यक्ति की परिकल्पित सीमाओं से परे है।

रामायण की मूल शक्ति ज्ञान है, जिसके कई पहलू हैं। कभी यह शब्द के रूप में व्यक्त होता है, कभी विचार के रूप में कभी संचरण के रूप में हमारे साथ चलता है और आचरण के रूप में हमें चलना सिखाता है। कभी–कभी वह मौन धारण कर हमारे मन को मुखरित कर देता है और कभी मनन बनकर मन में नमन की भावना पैदा कर देता है। कभी आज्ञा बनकर हमें आदेश देता है और कभी संज्ञा बनकर संदेश का सार सुनाता है। कभी प्रज्ञा बनकर पंडितों को प्रबुद्ध बनाता और कभी विद्या बनकर विज्ञ को विद्वान बना देता है। कभी कर्म की भावना जगाता है और कभी धर्म का रहस्य खोलता है। कभी मुक्ति का मार्ग दिखाता है और कभी भक्ति का गीत सुनाता है। संक्षेप में रामायण जिस अर्थ में ज्ञान का पीठ माना जा सकता है उस अर्थ में यह ज्ञान संसार का सर्वस्व है और समस्त साधना का सार है। इसीलिए रामायण में चित्रित लोक सामाजिक जीवन उसकी विशालता तथा गहराई को स्थान–स्थान पर प्रकट करता है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डुलिपि– हिन्दी प्रचार सभा मद्रास
2. रामायण बालकाण्ड 2/36
3. रामायण बालकाण्ड 2/31
4. रामायण बालकाण्ड 2/34
5. रामायण बालकाण्ड 2/35
5. रामायण बालकाण्ड 2/15